आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:26-11-14

अपने ज्ञान, गुणों और शक्तिओ से हमारे सर्व भंडारे भरपूर करने वाले, बेहद के सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - शिवबाबा आया है तुम्हारे सब भण्डारे भरपूर करने, कहा भी जाता है सर्व भण्डारे भरपूर काल कंटक दूर.

बाबा हमें हर रोज तीन बातों का ज्ञान हर मुरली में देते है - आत्मा का, परमात्मा का और सृष्टि चक्र का. आत्मा का ज्ञान हमें आत्मा-अभिमानी बनाने के लिए हैं. परमात्मा का ज्ञान से हम आत्माये अपनी आत्म-अभिमानी स्थिति में रहकर उस परमात्मा से योग करती है. जिसे ही आत्मा अपने जन्म-जन्मांतर के पापों से मुक्त हो सकती हैं. फिर सारी सृष्टि चक्र का ज्ञान से हम आत्माये अपना स्वयं का स्वदर्शन चक्र घुमाते है जिसे माया पर विजय प्राप्त होती हैं. सृष्टि चक्र के ज्ञान को पढ़ाई भी कही जाती है जिसे हम दूसरों को देकर अपना पदमापदम भाग्य बनाते हैं.

आज की बाबा की मुरली से इन तीनों टोपिक पर बाबा के महा-वाक्यों निकालकर उसे पढ़ेंगे.

आत्मा का ज्ञान के लिए कहे गये महा-वाक्यों -----

- बाबा कहते है बच्चों की बुद्धि बेहद में जानी चाहिए. इतनी करोड़ मनुष्य आत्माये सब अपने-अपने शरीर रुपी तख्त पर विराजमान हैं. यह बेहद का नाटक है. आत्मा इस तख्त पर विराजमान होती है. तख्त एक न मिले दूसरे से. सबके फिचर्स अलग-अलग हैं, इनको कहा जाता है कुदरत.

- बाबा कहते है आत्मा अति सूक्ष्म है. इससे सूक्ष्म वन्डर कोई हो नहीं सकता. इतनी छोटी आत्मा में ८४ जन्मो का रिकार्ड भरा हुआ रहता है. हर एक का कैसा अविनाशी पार्ट है. इतनी छोटी आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है, जो यहॉ ही पार्ट बजाती है. आत्मा कभी छोटी-बड़ी नहीं होती है.

- बाबा कहते है आत्मा के रुप में तो सब मनुष्यों आपस में भाई-भाई हो.

परमात्मा का ज्ञान के लिए कहे गये महा-वाक्यों --

- बाबा कहते है बच्चे जानते है कि बेहद का बाप इस समय यह रुहानी पढ़ाई पढ़ाने की सेवा करते हैं. बाप का भी पार्ट बजाते है, टीचर का भी पार्ट बजाते है और गुरु का भी पार्ट बजाते है. तीनों पार्ट अच्छे बजा रहे हैं. परमपिता परमात्मा शिवबाबा की जीवन-कहानी को भी हम जानते हैं.

- बाबा कहते है अभी तुमको ज्ञान मिला है तब समझते हो भक्ति किसको कहा जाता है, ज्ञान किसको कहा जाता है? ज्ञान देने वाला बाप ज्ञान का सागर भी अभी मिला है. बाबा ही तुम बच्चों को ज्ञान रत्न देते हैं. बाप है सागर. ज्ञान रत्नों का सागर.

- बाबा कहते है बाप है बिजरुप. उनमें ही झाड़ के आदि, मध्य, अन्त की सारी नॉलेज है.

स्वदर्शन चक्र घुमाने के लिए कहे गये महा-वाक्यों --

- बाबा कहते है सारा विराट रुप जरूर तुम बच्चों की बुद्धि में रहता होगा. हम अभी ब्राह्मण बने हैं, फिर हम देवता बनेंगे फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनेंगे. बाप आकरके हमको शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं फिर हम ब्राह्मण से देवता बनेंगे. ब्राह्मण बन कर्मातीत अवस्था को प्राप्त कर फिर वापिस जायेंगे.

- बाबा कहते है बच्चे जानते है कैसे हम उत्थान में थे फिर पतन में आये, अब फिर उत्थान में जाना है.

- बाबा कहते है बाप द्वारा तुम सारे चक्र को जान जाते हो. अभी हम संगम पर है. यह है हमारा अन्त का जन्म. पुरुषार्थ करते-करते हम पुरा ब्राह्मण बन जायेंगे फिर बाबा की गोद में चले जायेंगे. फिर सतयुग में फिर से श्रीकृष्ण के साथ अपना पार्ट बजाने आयेंगे.

ॐ शांति.